Cz – पर्वत पर उपदेश का परिचय मत्ती ५:१-२ और लुका ६:१७-१९ | 1

– Save This Page as a PDF–

पर्वत पर उपदेश का परिचय

मत्ती ५:१-२ और ल्यूक ६:१७-१९



एक इकाई के रूप में, पहाड़ी उपदेश फरीसी
यहूदी धर्म के विपरीत तोरा की सच्ची धार्मिकता की यीशु की व्याख्या है। इसने स्पष्ट किया कि टोरा को केवल बाहरी अनुरूपता की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि इसके लिए आंतरिक और बाहरी धार्मिकता दोनों की आवश्यकता थी। तो यह स्पष्ट रूप से टोरा में मांग के अनुसार एडोनाई की धार्मिकता को बताता है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि टोरा की व्यवस्था (निर्गमन Da पर मेरी टिप्पणी देखें – टोरा की व्यवस्था) मसीहा के आने के साथ समाप्त नहीं हुई, यह मसीहा की मृत्यु के साथ समाप्त हुई। जब तक यीशु जीवित थे, टोरा की सभी ६१३ आज्ञाओं को पूरी तरह से रखा जाना था।

इसके विपरीत, एक इकाई के रूप में, माउंट पर उपदेश भविष्य के साम्राज्य का संविधान नहीं है: यदि यह सच होता, तो हमें टोरा की सभी ६१३ आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक होता। Dw – संकीर्ण और चौड़े द्वार में इसके चरमोत्कर्ष को छोड़कर, यह मुक्ति का रास्ता नहीं है: उच्च नैतिक मानक आपको स्वर्ग के राज्य में नहीं ले जाएंगे। मोक्ष कर्मों के आधार पर नहीं है; हालाँकि, यह पहले से ही बचाए गए लोगों के लिए एक नैतिक संहिता है। एक इकाई के रूप में, इसे अनुग्रह के इस वितरण के दौरान विश्वासों के लिए एक नैतिक मानक के रूप में काम नहीं करना था। व्यक्तिगत रूप से, यह कुछ ऐसी बातें कहता है जो बाद में विश्वासियों के लिए नैतिकता बन जाती हैं। लेकिन यदि यह एक नैतिक मानक होता तो हम सभी ६१३ आज्ञाओं का पालन करने के लिए बाध्य होते। पुरुष दाढ़ी नहीं बना सकते थे, आप मिश्रित धागों के कपड़े नहीं पहन सकेंगे, और पुरुष अपनी दाढ़ी को गोल नहीं कर सकते थे, आदि।४९८

अब जब यीशु ने भीड़ को देखा तो वह एक पहाड़ी पर चढ़ गया, एक समतल जगह पाई और बैठ गया, जो पहली शताब्दी में एक रब्बी-शिक्षक की स्थिति थी (ट्रैक्टेट बेराचोट २७बी)। कई लोग सच्चे शिष्य बन गए थे क्योंकि उन्होंने गलील के अपने रब्बी के चरणों में सीखना चुना था। यहां का संदर्भ हमें एक अन्य पर्वत – माउंट सिनाई – पर

Cz – पर्वत पर उपदेश का परिचय मत्ती ५:१-२ और लुका ६:१७-१९ | 2

टोरा के पहले दान की याद दिलाता है।



हालाँकि येशु पहाड़ पर बड़ी भीड़ के सामने
बोल रहे थे, राज्य जीवन के बारे में उनकी शिक्षा मुख्य रूप से उनके शिष्यों के लिए थी, उन लोगों के लिए जो उस पर विश्वास करते थे। प्रभु की चिंता सभी लोगों के लिए थी, और राज्य की धार्मिकता पर उनकी शिक्षा सुनकर उनमें से कई लोग विश्वास की ओर आकर्षित हुए होंगे। लेकिन उन्होंने जो सिद्धांत सिखाए वे केवल विश्वासियों पर लागू होते थे, क्योंकि रुआच हाकोडेश की शक्ति के बिना उन सिद्धांतों का पालन करना असंभव है। उसके शिष्यों की एक बड़ी भीड़ वहां थी और पूरे यहूदिया, यरूशलेम और सूर और सैदा के आसपास के तटीय क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोग थे (मत्ती ५:१; लूका ६:१७), जो उसे सुनने आए थे और उनकी बीमारियों से ठीक होने के लिए. बड़ी संख्या में लोगों का उल्लेख उस समय यीशु के मंत्रालय की लोकप्रियता की ओर इशारा करता है। ईसा मसीह ने जिस धार्मिकता की बात की थी और फरीसी यहूदी धर्म की धार्मिकता स्पष्ट रूप से बहुत अलग थी। और उनके मंत्रालय के उपचार पहलू से अलग, कई लोग आंतरिक धार्मिकता के प्यासे थे जो येरुशलायिम में उनके धार्मिक नेताओं द्वारा समर्थित बाहरी औपचारिकता से स्पष्ट रूप से अलग था।

अशुद्ध आत्माओं से परेशान लोग ठीक हो गए, और सभी लोगों ने उसे छूने की कोशिश की, क्योंकि उसमें से शक्ति आ रही थी और उन सभी को ठीक कर रही थी (लूका ६:१८-१९)। वस्तुतः उस दिन हजारों लोग ठीक हुए। वहाँ कोई उपचार रेखाएँ नहीं थीं, कोई इस को थप्पड़ मारना और उस को थपथपाना नहीं था, लोगों को पीछे और आगे की ओर गिराना नहीं था। जिन लोगों को मसीहा ने ठीक किया उन्हें कुछ भी नहीं करना पड़ा। हमारा प्रभु दूर से ही उन्हें चंगा भी कर देगा। और येशुआ द्वारा किए गए उपचार वास्तविक थे, और इसे साबित करने के लिए हमारे पास यहां डॉक्टर ल्यूक का गवाह है। मैं विश्वास से उपचार करने वालों पर विश्वास नहीं करता, लेकिन मैं विश्वास से उपचार करने में विश्वास करता हूँ। अपनी समस्या महान चिकित्सक के पास ले जाएं। वह सबसे अच्छा डॉक्टर है जिससे आप परामर्श ले सकते हैं (और वह आपको बिल नहीं भेजता है)।

उसने अपना मुँह खोला और उन्हें शिक्षा देने लगा (मत्ती ५:२)। जब मत्ती ने उन्हें पढ़ाना शुरू किया तो यीशु ने अपना मुँह खोलने के बारे में जो कहा वह स्पष्ट रूप से कोई अतिश्योक्तिपूर्ण बयान नहीं था, बल्कि एक सामान्य बोलचाल की भाषा थी जिसका उपयोग एक संदेश पेश करने के लिए किया जाता था जो विशेष रूप से गंभीर और

Cz – पर्वत पर उपदेश का परिचय मत्ती ५:१-२ और लुका ६:१७-१९ | 3

महत्वपूर्ण था। इसका उपयोग अंतरंग, हार्दिक गवाही को इंगित करने के लिए भी किया गया था और इसलिए यह निहित था कि मसीहा का उपदेश आधिकारिक और अंतरंग दोनों था; यह अत्यंत महत्वपूर्ण था और अत्यंत चिंता के साथ वितरित किया गया था।